# उपसंहार

हिंदी कहानी की यात्रा तीन बडे मोड ले चुकी है। प्रेमचंद से पहले यह सुनने-सुनाने की वस्तु थी, प्रेमचंद ने इसे पढने-पढाने की वस्तु बनाया और अब वह समझाने-समझाने की चीज बनती जा रही है। इस यात्रा में हिंदी कहानी अथवा समस्त कहानी का इतिहास एवं विकास लक्षित होता है। कहानी के आदि रूप में घटनाओं की अधिकता रहती थी, इसके बाद पात्रों और चरित्रों के द्वारा बात कही जाने लगी और अब संकेतो तथा प्रतिकों के माध्यम से बात को कहने का प्रयास हो रहा है।

यशपाल मार्क्सवादी कहानी लेखक है। इसी कारण उन्होंने अपनी कहानियों में विविध वर्गगत संघर्षों का मार्मिक चित्रण किया है। अंग्रेजो द्वारा किये गये शोषण और उनके भारतीय एजेन्ट जमीदारों द्वारा किये गये शोषण और उत्पीडन के कारण मार्क्सवादी विचारधारा को भारत में काफी लोकप्रियता मिली। भारत में क्रांतिकारियों का एक वर्ग अंग्रेजों के प्रति विद्रोह की भावना से भरा हुआ था। साहित्य के क्षेत्र में

इस भावना के ध्वजवाहक यशपाल ही थे। यशपाल ने प्रगति के मार्ग में आनेवाली रूढियों और अंधविश्वासों का खंडन करना चाहा। शोषण के हर रूप का हर स्तर पर विरोध किया। भावनात्मकता की निंदा की तथा साहित्य को मनुष्य की भौतिक तथा मानसिक प्रगति का वाहक माना। यशपाल की कहानियों का मूल स्तर यही है। इस विचारधारा का सूत्रपात प्रेमचंद के समय से हुआ, किंतु प्रेमचंद का दृष्टिकोण भारतीय एवं गांधीवादी था, जब कि यशपाल का दृष्टिकोन संघर्षात्मक और व्यंग्यपूर्ण है।

यशपाल ने अपने साहित्यिक जीवन का प्रारंभ कहानियों से किया है, उपन्यासों से नहीं। अपनी कहानियों में वे निरंतर विकासशील रहे। कहानीकार के रूप में यशपाल उपन्यास कार की अपेक्षा अधिक सफल रहे। यशपाल की कहानियों के विषय भिन्न-भिन्न है। उन्होंने इतिहास, समाज, राजनीति, धर्म, पुराण आदि अनेक क्षेत्रों से अपनी कहानियों के विषय चुने है। वैसे उनके कहानियों के कथानक वर्ग वैषम्य, आर्थिक विषमता, असमानता और प्रेम पर आधारित है। उनकी अधिकांश कहानियां समस्या प्रधान है। उन्होंने सम-सामयिक जीवन और समस्याओं का यथार्थपरक वर्णन किया है। उनकी बहुतसी कहानियों में नारी को प्रधानता मिली है। पूंजीवादी समाज में नारी की कोई स्वतंत्र सत्ता नहीं है, ऐसी यशपाल की मान्यता थी। नारी ऐसे समाज में मात्र भोग-विलास की सामग्री मानी जाती है। वह अपना स्वतंत्र अस्तित्व खो देती है। वह केवल पति को प्रसन्न करना और बच्चों की देखभाल करना अपना परम कर्तव्य समझती है। यह स्थिति असह्य है ■ नारी की वैयक्तिकता का उध्दार होना चाहिए ऐसा यशपाल का दावा था और उन्होंने इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए अपनी अनेक कहानियों में नारी समस्याओं को बडे विस्तार के साथ चित्रित किया।

यशपाल ने समाज की नारी समस्या को हर पहलू से देखने का प्रयास किया है। चिरकाल से अन्तर्जगत और बाह्य जगत के संघर्षों से पीडित, उच्च वर्ग तथा मध्यवर्ग के आमोद-प्रमोद के साधन रूप (वेश्या रूप) में नारी की स्थिति का दिग्दर्शन कराकर [redacted] समाज की इस कुरूपता पर ` दुखी-दुखी,`` हलाल का टुकडा,`` आबरू,`` गडिरी ` और ` आदमी या पैसा ` आदि कहानियों में गहरा प्रहार किया है। ये कहानियां तीखा व्यंग्य लिए हुए समाज की उस दशा का रूप दिखाती है। उनमें से कुछ अलग से जोडने का प्रयास नहीं किया गया है, उपदेश या भाषण नहीं दिया गया है। एक यथार्थ चित्र की अत्यंत प्रभावशाली झालक दिखाकर छोड दिया गया है, जिसे देखकर पाठक भौचक्का रह जाता है, कि अरे, यह तो हमारे ही समाज का रूप है जिसे हम प्रतिदिन देखकर भी नहीं देखते थे।

यशपाल की कहानियों में मध्यवर्ग की नारी समस्या को प्रधानता मिली है। कहने को तो वह गृहस्वामिनी है, पर बंधनों में जकडी हुयी, रूढियों से ग्रस्त, बच्चा पैदा करने की मशीनमात्र। जैसे हम बढिया कुत्ता अपने साथ लेकर घूमते है उसी प्रकार हम अपनी स्त्रियों को साथ लेकर घूमते है। दुनिया को दिखाना चाहते है कि देखो हमारे पास भी सुंदर जानवर है। ` कुछ समझ न सका,`` अपनी चीज,` ` जबरदस्ती,`` अगर हो जाता,`` कुलिया नारी,`` रिक्त ` आदि कहानियों में इसी समस्या को चित्रित किया है। इन नारियों का सब काम जबरदस्ती से होता है। वे धर्म और पुण्य करती है जबरदस्ती करवाने पर, पाप करती है मजबूर होकर। वे अपने बच्चों को प्यार नहीं कर पाती, क्योंकि उसे उन्हें मजबूरी से पेट में ढोना पडता है। मध्यवर्ग की नारी पिंजरे मे पैदा होनेवाली चिडिया है, उसे कभी खयाल

नहीं आता कि वह खुले आसमान में उड भी सकती है, वृक्षों से ताजे फल चुग सकती है। उसे कभी ऐसी इच्छा भी नहीं होती, परंतु एक बार यह जान लेने पर कि खुले आसमान में पर फैलाकर उड सकना चाहिए और वह उड सकती, तो सोने का पिंजरा और घी की पूरी उसके लिए मिठ्ठी हो जाती है।

यशपाल की कहानियों में शिक्षित स्त्रियाँ भी है, जो जीवन में पुरुष के साथ है। बराबरी पर भी है पर उनकी अलग समस्याएँ है। वे हर बात में दु:ख ही अनुभव करती है, आवश्यकता से अधिक आदर और संवेदना की आशा में घुली जा रही है। `दुख,`` दो मुँह की बात ` तथा ` उतरा नशा ` आदि कहानियाँ इसी प्रकार की है।

इसके अतिरिक्त मजदूर श्रेणी की स्त्रियाँ है जो कठिण श्रम करती है, जिनमें जीवन की हसद नहीं। जो गुजरे के लिए अपना शरीर बेचने को तैयार रहती है, जैसे ` कोकला डकैत ` है। इसी प्रकार कोयलेवाली कहानी में, अभावों ने जिसके हृदय का प्रेम-रस अपहृत कर लिया है और जो सिर्फ पैसे के लिए शरीर दान करती है।

नारी की विभिन्न मन:स्थितियों और द्वन्दों का यशपाल को पर्याप्त ज्ञान है, वह नारी व्यवहार की एक-एक कडी को पहचानता है, वह प्रेमचंद से आगे आकर मनोविश्लेषण और अंतर्द्वन्दों का, चारित्रिक सूक्ष्मताओं का सुंदर रूप प्रस्तुत करता है। नारी की ओर उसका मोह अधिक लगता है। शायद वह सोचता हो पुरुष तो मै स्वयं ही हूँ और पुरुष होने का सबसे बडा सबूत उसका स्त्री की ओर अभिमुख होना ही है।

इसी प्रकार समाज में नारी की विभिन्न प्रकार की स्थितियों से यशपाल भलीभाँति परिचित है। वह स्कूल अध्यापिका, मजदूरिन, वेश्या, मध्यवर्ग की गृहस्वामिनी, कॉलेज की छात्रा सबको सहानुभूतिपूर्ण ढंग से देखता है और उनकी यथार्थ समस्याओं को समझानेका प्रयास करता है। पर ग्रामीण स्त्रियों की समस्याओंको यशपाल ने अपनी कहानियों में नहीं के बराबर उठाया। उनको छोड दिया है। लेखक नागरिक जीवन का अभ्यासी है। उसे ग्रामीणों से बौध्दिक सहानुभूति तो है पर ग्राम्य समस्याओं में उसका मन नहीं रमता। वह केवल चलते चलते उनके बारे में कुछ कह देता है। पर तो भी नारी जीवन के प्राय: हर पहलू को यशपाल ने छू ने का प्रयास किया है और उसकी संपूर्ण वेदना को साकार कर दिया है।

यशपाल की कहानी - कला का स्पष्ट उद्देश्य समाज का सुधार, व्यक्ति का परिष्कार, जीवन का रूपांतरण है। इसके लिए वह अपने कहानी, साहित्य की रचना करते है। उनका विश्वास है कि आज पाठक के विचारों को बदलने की आवश्यकता है, ताकि नयी परिस्थितियों के अनुरूप सामाजिक धारणाएँ तथा वैयक्तिक मान्यताएँ बदल सके। पुरानी मान्यताएँ रूढ हो चुकी है, धारणाएँ जड पड चुकी है, और ये जीवन तथा समाज के विकास को अवरूध्द कर रही है। आज शोषित को उठाना है, नारी को उसकी दासता से मुक्त करना है। इसलिए उनकी कहानी उन सब रूढियों, जड मान्यताओं तथा यांत्रिक मानव-सम्बन्धों को चुनौती देने के उद्देश्य से लिखी गई है। यशपाल आर्थिक विषमता पर भी बार-बार प्रहार करने के लिए कहानी की रचना करते है।

इसकी चर्चा करते हुए कुमारी अनुविग ने कहा है - " यशपाल की कहानियों का प्रमुख उद्देश्य नारी की दासता का खण्डन है। मध्यमवर्गीय

समाज के एक सदस्य होने के नाते वह इस समाज में नारी को ही अधिक शोषित पाते है । इस शोषण की गहरी अनुभूति इनके समस्त कथा-साहित्य में व्याप्त है । यदि वह विवाहित है तो उसके अस्तित्व को नगण्य रूप मेंचित्रित कर पुरूष-प्रधान सामाजिक विधान की कडी आलोचन करते है । नारी की यह दास्ता पहाडी जीवन में अधिक स्पष्ट रूप में उपलब्ध होती है । इसलिए पहाडी जीवन से सम्बध्द कहानियों में नारी को एक क्रय - विक्रय की वस्तु के रूप में अंकित किया गया है । इसके अनेक उदाहरण है । ` सिगरेट,`` आतिथ्य,`` उत्तराधिकारी,`` निरापद ` आदि कहानियों मे नारी की स्थिति को दयनीय तथा शोचनीय रूप में अंकित किया गया है । `[१]

इस तरह यशपाल ने अपनी कहानियों में नारी की सामाजिक, पारिवारिक, आर्थिक और मनोवैज्ञानिक समस्याओं को चित्रित करने में सफलता प्राप्त की है ।

यशपाल की कहानियों में -

१) प्रेम एवं विवाह की समस्या
२) अविवाहित प्रौढा की समस्या
३) स्वच्छंद प्रेम की समस्या
४) अनमेल विवाह की समस्या
५) नारी स्वातंत्र्य की समस्या
६) वेश्यावृत्ति की समस्या
७) बाल विधवा तथा सती प्रथा की समस्या
८) नारी और यौन समस्या तथा
९) नारी पराधीनता की समस्या को चित्रित किया है ।

इसके साथ ही -

१०) आर्थिक विपन्नता से पीड़ित नारी

११) मानवी विकृति

१२) अंधविश्वास का शिकार

१३) सामाजिक कुप्रथा से ग्रस्त

१४) नारी मनोविज्ञान

१५) स्त्री-पुरुष संबंधों का चित्रण आदि विषयों को भी चित्रित किया है ।

संक्षेप में हम कह सकते है कि यशपाल ने नारी जीवन के प्रत्येक पहलू को बडी सूक्ष्मता और सहजता के साथ छूने की कोशिश की है ।

## संदर्भ

१. कुमारी अनु विग - यशपाल की कहानी, पृ.७४.